भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म देखलाओ, तुम सकल में सांई देख्या।
ए संसार सकल है सुपना, तो तुम पारब्रह्म क्यों पेख्या।।

सत सुपने में क्योंकर आवे, सत सांई है न्यारा।
तुम पारब्रह्म सों परच्या नाहीं, तो क्यों उतरोगे पारा।।

काल आवत कबूं ब्रह्म भवन तुम क्यों न विचारो सोई।
अखंड सांई जो यामें होता, तो भंग ब्रह्मांड को न होई।।

यामें प्रेम लछन एक पारब्रह्म सों, एक गोपियों ए रस पाया।
तब भवसागर भया गौपद बछ, विहंगम पैंडा बताया।।

कई दरवाजे खोजे कबीरें, बैकुंठ सुन्य सब देख्या।
आखिर जाए के प्रेम पुकारचा, तब जाए पाया अलेखा।।

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म सुपने में, महामत कहे यो पाइए।
पार निकस के पूरन होइए, तब फेर सब दृष्टें देखाइए।।